RESEARCH ARTICLE Bhartiya Krishi Anusandhan Patrika, Volume 39 Issue 3-4: 207-210 (September and December 2024)

राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में पशुधन पशुपालन के अच्छे तरीकों (जीआरपी) को अपनाने में आने वाली बाधाओं की रैंकिंग

डी. कुमार

सारांश

पशुओं में, बड़े जुगाली करने वाले पशु अर्थात थारपारकर नस्ल की गाय दूध और अन्य डेयरी उत्पादों के लिए सबसे अधिक पाली जाती है। गाय के अलावा भेड़, बकरी, भैंस और ऊँट भी इस क्षेत्र में प्रमुखता से हैं। भेड़ और बकरियों को आम तौर पर झुंड में पाला जाता है जबकि ऊँट अकेले या दो से पाँच के समूह में पाया जाता है। पशुपालन की अच्छी प्रथाओं को अपनाने में आने वाली बाधाओं की पहचान करने के लिए जैसलमेर जिले के विभिन्न गाँवों के पाँच तहसीलें में सर्वेक्षण किया गया, अर्थात जैसलमेर के तेजवा, फूसासर भणियाणा के फूसासर, फतेहगढ़ के फतेहगढ़, मोहनगढ़ के सदराऊ और पोकरण के लावा लवा के हैं। इस अध्ययन के लिए, प्रत्येक तहसील से 15 किसानों का चयन किया गया था। इस प्रकार कुल मिलाकर चयनित पांच गाँवों के 75 किसानों से प्राप्त जानकारी के आधार पशुपालक के विकास में होने वाली बाधाओं का चयन किया गया था बाधाओं को मापने के लिए गैरेट रैंकिंग तकनीक का उपयोग किया गया जाता है। पशुधन प्रजनन की पहचान प्रमुख बाधा के रूप में की गई है, इसके बाद पशुओं में आहार प्रबंधन को खिलाने (एमपीएस), स्वास्थ्य देखभाल, आवास प्रबंधन और प्रबंधन तथा एमपीएस के साथ विपणन है। इन बाधाओं को दूर करने से पशुधन के लिए अच्छे पालन–पोषण के तरीकों को अपनाना तथा पशुधन उत्पादकता में पशुपालन में शामिल किसानों की आय बढ़ाने के लिए एक बड़ा कदम हो सकता है, जिससे उनकी आजीविका की स्थिति में सुधार होगा। राजस्थान के जैसलमेर, बाड़मेर और पाली जिले में पशुपालकों के बीच लम्पी वायरस महामारी को प्रमुख बाधा के रूप में देखा गया।

शब्दकुंजी: पशुधन, बाधाएं, अच्छी पालन प्रथाएं, अति शुष्क क्षेत्र ।

Ranking of Barriers to Adoption of Good Livestock Husbandry Practices (GRP) in Arid Zone of Rajasthan

D. Kumar[1]

10.18805/BKAP744

ABSTRACT

Among the animals, large ruminant cattle *i.e.* cow of Tharparkar breed is most commonly reared for milk and other dairy products. Apart from cow, sheep, goat, buffalo and camel are also prominent in this area. Sheep and goats are generally reared in herds whereas camels are found singly or in groups of two to five. To identify the barriers in adopting good animal husbandry practices, survey was conducted in five tehsils of different villages of Jaisalmer district, *viz*. Tejwa of Jaisalmer, Phusasar of Bhaniyana, Phusasar of Fatehgarh, Sadrao of Mohangarh and Lava of Pokaran. For this study, 15 farmers were selected from each tehsil. Thus, in total 75 farmers from the selected five villages were selected based on the information received. Garrett ranking technique was used to measure the barriers in the development of animal husbandry. Livestock breeding has been identified as the major constraint, followed by feeding management in animals (MPS), health care, housing management and administration and marketing along with MPS. Removing these constraints can go a long way in adopting good husbandry practices for livestock and increasing livestock productivity and income of farmers involved in animal husbandry, thereby improving their livelihood conditions. Lumpy virus epidemic was observed as the major constraint among livestock farmers in Jaisalmer, Barmer and Pali districts of Rajasthan.

Key words: Constraints, Extreme arid region, Good husbandry practices, Livestock.

परिचय

जैसलमेर, राजस्थान का सबसे बड़ा जिला है और क्षेत्रफल (32,401 वर्ग किलोमीटर) के अनुसार देश का तीसरा सबसे बड़ा जिला है। जैसलमेर जिला थार रेगिस्तान में स्थित है, जो भारत और पाकिस्तान की सीमा तक पर फैला हुआ है। पशुधन अर्थात् गाय, बकरी, भेड़, ऊँट और भैंस भैंसा पश्चिमी राजस्थान में एकीकृत कृषि प्रणाली के अभिन्न अंग हैं (जयंती

[1]Department of Agricultural Extension, Regional Research Station Jaisalmer, ICAR-CAZRI-Jodhpur, Rajasthan, India.

Corresponding Author: D. Kumar, Department of Agricultural Extension, Regional Research Station, Jaisalmer, ICAR-CAZRI-Jodhpur, Rajasthan, India. Email: dkdkdangi@gmail.com

How to cite this article: Kumar, D. (2024). Ranking of barriers to adoption of good livestock husbandry practices (GRP) in arid zone of Rajasthan. Bhartiya Krishi Anusandhan Patrika. 39(3-4): 207-210. doi: 10.18805/BKAP744.

Submitted: 27-05-2024 **Accepted:** 09-10-2024 **Online:** 31-12-2024

एट अल., 2002)। हरे फल देने वाले पेड़ और झाड़ियाँ जैसे खेजड़ी (*प्रोसोपिस सिनेरिया*), कुमाट (*अकेशिया सेनेगल*), लाना (*हैलेक्सिसेलॉन*), आक (*कैलोट्रोपिस एसपीपी.*), खीप (*लैप्टोडिनिया पायरोटेक्निका*), और घास जैसे सेवन (*लासिरस सिंडीकस*), अंजन (*सेन्चुरस सिलिएरस*), बेकरिया घास, गोखरू इस क्षेत्र के पशुओं के उत्तरजीविता के लिए बहुत सहायक हैं। हालांकि, पशुपालकों को प्रजनन, आहार, स्वास्थ्य देखभाल, विपणन और प्रबंधन संबंधी बाधाओं से संबंधित बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन समस्याओं में प्रजनन और आहार प्रमुख समस्याएं हैं (सिंह एट अल., 2004)। बकरी, ऊंट और भेड़ के लिए कृत्रिम गर्भाधान सुविधा का अभाव प्रजनन में बहुत आम समस्या है, जबकि आहार में या संतुलित पोषण की कमी और अच्छी गुणवत्ता वाले चारे की कमी एक महत्वपूर्ण समस्या है । स्वास्थ्य देखभाल में, टीकाकरण की कमी बहुत आम समस्या है, यही समस्या बड़े पशु के लम्पी त्वचा महामारी में देखी गई है (तिवारी एट अल., 2003)। पिछले वर्ष के दौरान इस क्षेत्र में गांठदार त्वचा रोगो ने (एलएसडी) पशुपालकों के आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। लाभकारी उचित मूल्य का अभाव विपणन में बहुत गंभीर समस्या है, जबकि उचित शेड का अभाव पशु प्रबंधन में बड़ी समस्या है (नचिमुथु, 2002)। श्रीलता (2005) के अध्ययन अनुसार ने बताया कि पशुधन आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली में अधिकांश किसानों के सामने आने वाली सबसे महत्वपूर्ण बाधाएँ तकनीकी मार्गदर्शन, की कमी, परिसंपत्ति सुविधाओं, और इनपुट उपलब्धता की कमी के अतिरिक्त, उच्च श्रम लागत और इनपुट उपलब्धता की कमी थी। जयंती एट अल. (2002) ने बताया कि डेयरी में किसानों के सामने आने वाली प्रमुख समस्याएं थीं गुणवत्तापूर्ण चारे की उपलब्धता की कमी, फीड सांद्रता की उच्च लागत, अपर्याप्त पशु चिकित्सा सेवाएं और बार–बार प्रजनन के उपरांत गर्भधारण न करना, किसानों के सामने आने वाली प्रमुख समस्याएं थी। जिसके कारण उनके खेत की उत्पादकता अक्सर बहुत कम पाई जाती थी। डेयरी उत्तरदाताओं को कई बाधाओं का सामना करना पड़ा जैसे कि पशु चिकित्सा विस्तार कर्मियों की कमी, बहुत कम पशु चिकित्सालय, अस्पताल, कम पशु चिकित्सा कर्मचारी, बार–बार प्रजनन की समस्या आदि जैसे कई बाधाओं का सामना करना पड़ा था आदि। (बिस्वास एट अल., 2003)

सामग्री और विधियां

सीएजेडआरआई–आरआरएस जैसलमेर द्वारा वर्ष 2020–23 के दौरान एक अध्ययन किया गया। जैसलमेर जिला के पांच गांव तेजवा, भणियाणा के फूसासर, फतेहगढ़, सदराऊ, मोहनगढ़ और पोकरण तहसील जैसलमेर जिले की पोकरण तहसील के लावा को चयनित किया गया है। प्रत्येक गांव से पंद्रह पशुपालक किसानों को चुना गया है, जिनके पास कोई भी या सभी छोटे या बड़े जुगाली करने वाले पशु हैं। इस प्रकार सभी पांच गांवों से कुल 75 किसानों का चयन किया गया है। इस अध्ययन के लिए जैसलमेर की गर्म और शुष्क परिस्थितियों में गाय, ऊंट, बकरी, भैंस और भेड़ को ध्यान में रखा गया है।

परिणाम और चर्चा

प्रजनन बाधाएँ

पशु प्रजनन से संबंधित विभिन्न बाधाएं तालिका 1 में दी गई हैं, किसानों के दरवाजे पर कृत्रिम गर्भाधान एआई सुविधा की अनुपलब्धता गैरेट (स्कोर 75.67) के साथ पहले स्थान पर है। जबकि क्षेत्र में लम्पी वायरस जैसी महामारी के बारे में सरकार की प्रतिक्रिया की कमी है। रैंक XXVI गेरेट स्कोर 10.00। एनोस्ट्रस और प्रजनन विकारों के मामलों का इलाज करने में पशु चिकित्सा कर्मचारियों की विफलता (स्कोर 55.67), भैंसों में कृत्रिम गर्भाधान एआई के खराब परिणाम (स्कोर 53.34), क्षेत्र में स्क्रब बुल की उपस्थिति (स्कोर 52.45), कृत्रिम गर्भाधान एआई केंद्रों पर वीर्य की अनुपलब्धता (स्कोर 45.67) प्रजनन बाधाओं के स्थान पर पाई गयी थी। मैरी, (2001) के कृत्रिम गर्भाधान एआई केंद्रित निष्कर्षों पर पशु ले जाने के लिए किसान के पास समय की कमी इन निष्कर्षों के अनुरूप है।

प्रवाह चाट 1: डेटा संग्रह के लिए किसानों की नमूना योजना।

राजस्थान–राज्य, जैसलमेर – जिला					
तहसीलें	जैसलमेर	भणियाणा	फतेहगढ़	मोहनगढ	पोकरण
गांव	तेजवा	फुसासर	फतेहगढ	सदराऊ	लावा
किसानों की संख्या	15	15	15	15	15
कुल किसान	75				

(ii) एमपीएस = माध्य × 100
परीक्षण वस्तुओं की संख्या

तालिका 1: गैरेट के आधार पर उत्तरदाताओं द्वारा सामना की जाने वाली विभिन्न प्रजनन बाधाओं की रैंकिंग।

क्र.सं.	सामग्री गैरेट	स्कोर	रैंकिंग
1.	ए.आई. की अनुपलब्धता किसान के दरवाजे पर सुविधा।	75.67	I
2.	किसानों द्वारा ए.आई. के लिए पशु न ले जाना। गर्मी के उचित समय पर.	72.3	II
3.	ए.आई. की उपयोगिता की अज्ञानता। अभ्यास।	70.45	III
4.	ए.आई. के माध्यम से पैदा हुए संकर नस्ल के नर गाय के बछड़ों का बाजार मूल्य कम या बिल्कुल नहीं।	69.68	IV
5.	पशुओं में गर्मी का पता लगाने के लिए किसानों का अपर्याप्त ज्ञान।	65.46	V
6.	ए.आई. करने के लिए निर्धारित शुल्क के अतिरिक्त पैसे की मांग करना।	63.12	VI
7.	ए.आई. में 7 अकुशल सेवाएँ केंद्र।	60.23	VII
8.	एनोस्ट्रस और प्रजनन विकारों के मामलों का इलाज करने में पशु चिकित्सा कर्मचारियों की विफलता।	55.67	VIII
9.	ए.आई. के खराब परिणाम भैंसों में.	53.34	IX
10.	क्षेत्र में जंगली बैलों की उपस्थिति।	52.45	X
11.	ए.आई. पर वीर्य की अनुपलब्धता। केन्द्रों.	45.67	XI
12.	पशु को ए.आई. केंद्र पर ले जाने के लिए किसान के पास समय का अभाव।	43.67	XII
13.	लंबी दूरी पर एसएमएस का स्थान।	42.23	XIII
14.	ए.आई. रविवार को किसानों को सुविधा उपलब्ध नहीं है।	43.45	XIV
15.	ए.आई. की तुलना में प्राकृतिक सेवा को प्राथमिकताएँ।	40.46	XV
16.	ए.आई. की अनुपलब्धता किसान के दरवाजे पर सुविधा	38.67	XVI
17	एसएमसी/आरएआईसीएस के अस्तित्व के बारे में किसानों में अज्ञानता।	36.67	XVII
18.	ए.आई. की धारणा एक अप्राकृतिक प्रक्रिया के रूप में.	33.32	XVIII
19.	किसान के परिवार में पशु को ए.आई. तक ले जाने के लिए उपयुक्त व्यक्ति की अनुपलब्धता। कैंटर/एसएमसी.	32.12	XIX
20.	पशुचिकित्सा स्टाफ और किसान के बीच कम संवाद।	31.23	XX
21.	गर्भावस्था निदान में किसानों की रुचि का अभाव।	20.89	XXI
22.	संकर नस्ल की गायों के दूध में वसा का प्रतिषत कम होना।	18.24	XXII
23	किसानों का मानना है कि ब्याने के बाद 2–3 महीने के भीतर गायें कम दूध देती हैं।	16.45	XXIII
24	बकरी, भेड़ और ऊँट के लिए सुविधा का अभाव।	12.00	XXIV
25.	क्षेत्र में लम्पी वायरस जैसी महामारी को लेकर सरकार की प्रतिक्रिया का अभाव.	10.00	XXV

आहार संबंधी बाधाएँ

पशु आहार से संबंधित विभिन्न बाधाएँ हैं। सबसे महत्वपूर्ण बाधा मिश्रित आहार की उच्च लागत (गैरेट स्कोर 66.80) और इसके बाद चारा फसलों के बजाय नकदी फसलें उगाने में किसान की रुचि (स्कोर 62.59), अनुपलब्धता थी। किसानों के पास चारा उत्पादन के लिए भूमि की कमी (स्कोर 57.58) और सिंचाई की उपलब्धता की कमी (स्कोर 42.24) मिश्रित चारे की उच्च लागत (स्कोर 66.80), दुधारू मवेशियों/भैंसों के लिए अनुशंसित आहार प्रथाओं की जानकारी का अभाव (स्कोर 45.50), कमी दुधारू पशुओं को प्रतिदिन खनिज मिश्रण खिलाने का ज्ञान (स्कोर 55.52)। खनिज मिश्रण की उच्च लागत (स्कोर 40.45), क्षेत्र में मिश्रित आहार की अनुपलब्धता (स्कोर 38.44) मिश्रित चारा/खनिज मिश्रण की खरीद के लिए ऋण आपूर्ति का अभाव। (स्कोर 35.30), मिश्रित फीड के ज्ञान की कमी (स्कोर 34.25) ये निष्कर्ष वर्मा, 1993 के निष्कर्षों के अनुरूप हैं।

रोग नियंत्रण और उनके प्रबंधन की बाधाएं

पशु रोग नियंत्रण से संबंधित विभिन्न बाधाएं हैं। 2021–22 में पश्चिमी राजस्थान में गांठदार वायरस महामारी और अन्य का व्यापक प्रसार प्रमुख बाधाओं के रूप में देखा गया है। कुछ बाधाएं जैसे किसानों की अज्ञानता कि तालाब का पानी परजीवी रोगों का स्रोत हो सकता है, सिंचाई की उपलब्धता की कमी, नकदी फसलें उगाने में किसानों की रुचि, किसानों के पास चारा उत्पादन के लिए भूमि की अनुपलब्धता, मिश्रित चारा खनिज मिश्रण की खरीद के लिए ऋण आपूर्ति की कमी आदि दोनों उत्तरदाताओं

के लिए समान थीं। तालिका 1 के गहन विश्लेषण से पता चलता है कि सदस्यों द्वारा सामना किए जाने वाले सीमित कारकों की संख्या (सूचीबद्ध XIII में से VIII का सामना करना पड़ा) और गंभीरता के मामले में सदस्यों की तुलना में कम थी (सूचीबद्ध XIII में से XI का सामना करना पड़ा) संक्रामक रोगों के बारे में किसानों की अज्ञानता डेयरी सहकारी समितियों के सदस्यों द्वारा महसूस की गई सबसे गंभीर रोग नियंत्रण बाधा थी, जबकि पशु स्वास्थ्य देखभाल के लिए उपलब्ध सेवाओं और सुविधाओं के बारे में किसानों की अज्ञानता निजी डेयरी के सदस्यों द्वारा महसूस की गई दूसरी सबसे गंभीर रोग नियंत्रण बाधा थी। ये निष्कर्ष कन्नन, 2002, कुमार, 2001, वर्मा, 1993 के निष्कर्षों के अनुरूप हैं।

विपणन संबंधी बाधाए

विभिन्न बाजार संबंधी बाधाएँ हैं, विपणन बाधाओं में किसानों को लगता है कि दुग्ध सहकारी समितियाँ केवल प्रभावशाली लोगों के लिए हैं, (एमपीएस 20.02) सदस्यों में चतुर्थ स्थान पर हैं। गाँव में दुग्ध सहकारी समितियों का न होना, एमपीएस 20. 05, सदस्यों में तृतीय स्थान पर हैं, जिससे किसान बेचने को मजबूर हो जाते हैं। उनका दूध बिचौलियों के माध्यम से (एमपीएस 10.94), सदस्यों में वी रैंक वाली दुग्ध सहकारी समितियों को दूध बेचने की सुविधाओं के बारे में किसानों की अज्ञानता, जिसके कारण बिचौलियों द्वारा किसानों का शोषण होता है, ये के निष्कर्षों के अनुसार समग्र बाधाओं में पशु प्रजनन पहले स्थान पर है, उसके बाद पशु आहार और पशु स्वास्थ्य देखभाल और पशु विपणन अंतिम स्थान पर है (एमपीएस 60.2)।

निष्कर्ष

जैसलमेर में पशुओं के पालन में अत्यधिक शुष्क स्थिति, रेगिस्तानी वातावरण और पर्याप्त पानी की कमी सामान्य बाधाएँ हैं। (एमपीएस 45.00) पशु प्रजनन में सबसे अधिक देखी गई बाधा किसानों के घर पर कृत्रिम गर्भाधान सुविधा की अनुपलब्धता थी। (एमपीएस 80.00 के साथ) सबसे महत्वपूर्ण आहार बाधा मिश्रित आहार की उच्च लागत थी। (एमपीएस 66.80)।

संदर्भ

Bairathi, R. (1993). A study of constraints in milk production and procurement at different levels of Milk Producers Cooperative Union Ltd., Jaipur, Rajasthan. M.Sc. Thesis, NDRI (Deemed University), Karnal, India.

Chinnaiyan, P. (1979). A study on the pattern of production and marketing of milk in Erode Taluk, Tamil Nadu, M.Sc. Thesis, TNAU, Coimbatore.

Gupta, M. and Tripathi. (2006) Communication interventions for technical empowerment of resource-poor rural women in agriculture. J. of Communication Studies. 14(1): 30-37.

Jayanthi, C., Maithili, S. and Chinnasamy, C. (2002). Integrated farming systems - a viable approach for sustainable productivity, profitability and resource recycling under low land use farms. J. Ecobiol. 14(2): 143-148.

Kannan, M. (2002). Entrepreneurs' knowledge and attitude towards improved agricultural practices in Nagapattinam district of Tamil Nadu. M.Sc. Thesis, NDRI (Deemed University), Karnal, India.

Sharma, R.K. (1980) A study of socio-psychological and structural constraints in efficient execution of ICDP. Ph.D. Thesis, Kurukshetra University, Kurukshetra , India.

Singh, L. (1992). Knowledge and adoption of farming technology and its constraints. Indianman. 44 (9): 445-450.

Sreelatha, P. (2005). A study of beneficiaries and non-beneficiaries of clinics running under Argiclinics in Rajasthan. Ph.D. Thesis, NDRI (Deemed University), Karnal. Haryana, India.

Tiwari , M.K. and Arya , H.P.S. (2001). Impact of milk producer cooperative society on socio-economic status of member farmers: a case study in Bareilly district of U.P. Journal of Food and Home Sciences. 20(1): 50-53.

Yadav, V.K. (2005). Sustainability of scientific crop cultivation and practices: a comparative study in Bihar and Haryana. Ph.D. Thesis, N.D.R.I., (Deemed University), Karnal, Haryana, India.